भातखण्डे स्वर लिपि पद्धति एवं इस पद्धति में लिखने का ज्ञान

संसार की सम्पूर्ण भाषाएँ अपनी विशिष्ट लिपि पद्धति में निबद्ध होकर साहित्य का रूप धारण करती हैं। इसी क्रम में भारतीय संगीत साहित्य भी वर्त्तमान लिपि पद्धतियों के अन्तर्गत अपनी विशालता को प्राप्त कर विश्व की धरोहर बनती जा रही हैं।

संगीत जगत् में दो ऐसी महान विभूतियाँ हुईं जिन्होंने अपने-अपने ढंग से स्वरलिपियों की रचना की। इनमें प्रथम नाम पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का आता है। उनके द्वारा रचित स्वरलिपि को भातखण्डे स्वरलिपि का नाम दिया गया। उत्तर भारतीय संगीत में भातखण्डे स्वर लिपि का ही प्रचलन अधिक है।

भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की विधा

➲ **स्वर-चिह्न –**

शुद्ध स्वर	–	रे, ग, म, ध (कोई चिह्न नहीं)
कोमल स्वर	–	<u>रे</u>, <u>ग</u>, <u>ध</u> (नीचे बड़ी रेखा)
तीव्र स्वर	–	मं (ऊपर खड़ी रेखा)

➲ **सप्तक चिह्न –**

मंद्र सप्तक	–	प, ध, नी (नीचे बिन्दु)
मध्य सप्तक	–	रे, ग, म, प (कोई चिह्न नहीं)
तार सप्तक	–	गं, मं, पं, धं (ऊपर बिन्दु)

➲ **स्वर मान–**

स्वर मात्रा	–	ग, म
डेढ़ मात्रा	–	सा रे
आधी मात्रा	–	गम पध
चौथाई मात्रा	–	गमपध
एक तिहाई मात्रा	–	गमप
1/6 मात्रा	–	गमपधनीसां
दो मात्रा	–	ग–म–
अर्द्ध विराम	–	ग, मप

भातखण्डे ताल पद्धति

➲ **ताल लिपि**

सम	– x
खाली	– 0
विभाग	– 1
ताली	– ताली की संख्या जैसे 2, 3, 4

1. **प्रश्न : भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की विधि का उल्लेख करें।**
2. **प्रश्न : भातखंडे तालपद्धति का विवरण दें।**

◆◆◆